आरती सीताजी की

आरती कीजै जनक-लली की । राम मधुपमन कमल कली की ।।
रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरी, अन्तर सांवर बाहर गौरी ।
सकल सुमंगल सुफल फली की ।। आरती...
पिय दृगमृग जुगबन्धन डोरी, पिय प्रेम रस रस रासि किसोरी ।
पिय मन गति विश्राम अली की ।। आरती...
रूप रासि गुननिधि जगस्वामिनी, प्रेम प्रवीन राम अभिरामिनी ।
सरबस धन विदेह लली की ।। आरती...

विवरण

जो श्री राम जी के कोमल मन की रानी हैं तथा राजा जनक की पुत्री हैं, ऐसी सीता जी की हम आरती करते हैं । यह सीता जी श्री राम जी के मन की ज्योति हैं ।

इनका हृदय साँवला है अर्थात् इनके हृदय में वास करने वाले श्री राम जी साँवले हैं परन्तु सीता जी गोरी हैं, तथा सभी शुभ कार्य का सुन्दर फल देने वाली हैं । ये अपने पति की अन्तरात्मा की जगमग ज्योति हैं तथा सम्पूर्ण संसार के बंधन की डोरी इन्हीं के हाथों है ।

यह सीता जी श्री राम जी के प्रेम को और प्रगाढ़ बनाने वाली हैं तथा उनके मन को शीतलता प्रदान करने वाली हैं । इनके रूप एवं गुणों का समुद्र के समान कोई थाह नहीं है तथा ये पूरे संसार की देवी हैं एवं श्री राम जी के मन को प्रसन्न करनें में निपुण हैं । धन्य हैं ऐसी सीता जी, जिनकी हम आरती करते हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.